जीवनानंद दास

बाँग्ला के सर्वाधिक सम्मानित एवं चर्चित कवियों में से एक जीवनानंद दास का जन्म 1899 ई० में हुआ था । रवीन्द्रनाथ के बाद बाँग्ला साहित्य में आधुनिक काव्यांदोलन को जिन लोगों ने योग्य नेतृत्व प्रदान किया था, उनमें सबसे अधिक प्रभावशाली एवं मौलिक कवि जीवनानंद दास ही हैं । इन कवियों के सामने सबसे बड़ी चुनौती के रूप में था रवीन्द्रनाथ का स्वच्छंदतावादी काव्य । स्वच्छंदतावाद से अलग हटकर कविता की नई यथार्थवादी भूमि तलाश करना सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य था । इस कार्य में अग्रणी भूमिका जीवनानंद दास की रही । उन्होंने बंगाल के जीवन में रच-बसकर उसकी जड़ों को पहचाना और उसे अपनी कविता में स्वर दिया । उन्होंने भाषा, भाव एवं दृष्टिकोण में नई शैली, सोच एवं जीवनदृष्टि को प्रतिष्ठित किया ।

सिर्फ पचपन साल की उम्र में जीवनानंद दास का निधन एक मर्मांतक दुर्घटना में हुआ, सन् 1954 में । तब तक उनके सिर्फ छह काव्य संकलन प्रकाशित हुए थे – 'झरा पालक', 'धूसर पांडुलिपि', 'वनलता सेन', 'महापृथिवी', 'सातटि तारार तिमिर' और 'जीवनानंद दासेर श्रेष्ठ कविता' । उनके अन्य काव्य संकलन 'रूपसी बाँग्ला', 'बेला अबेला कालबेला', 'मनविहंगम' और 'आलोक पृथिवी' निधन के बाद प्रकाशित हुए । उनके निधन के बाद लगभग एक सौ कहानियाँ ओर तेरह उपन्यास भी प्रकाशित किए गये ।

'वनलता सेन' काव्यग्रंथ की 'वनलता सेन' शीर्षक कविता को प्रबुद्ध आलोचकों द्वारा रवींद्रोत्तर युग की श्रेष्ठतम प्रेम कविता की संज्ञा दी गयी है । वस्तुतः यह कविता बहुआयामी भाव-व्यंजना का उत्कृष्ट उदाहरण है । निखिल बंग रवींद्र साहित्य सम्मेलन के द्वारा 'वनलता सेन' को 1952 ई० में श्रेष्ठ काव्यग्रंथ का पुरस्कार दिया गया था ।

यहाँ समकालीन हिंदी कवि **प्रयाग शुक्ल** द्वारा भाषांतरित जीवनानंद दास की कविता प्रस्तुत है । यह कवि की अत्यंत लोकप्रिय और बहुप्रचारित कविता है । कविता में कवि का अपनी मातृभूमि तथा परिवेश से उत्कट प्रेम अभिव्यक्त होता है । बंगाल अपने नैसर्गिक सम्मोहन के साथ चुनिंदा चित्रों में सांकेतिक रूप से कविता में विन्यस्त है । इस नश्वर जीवन के बाद भी इसी बंगाल में एक बार फिर आने की लालसा मातृभूमि के प्रति कवि के प्रेम की एक मोहक भंगिमा के रूप में सामने आती है ।

लौटकर आऊँगा फिर

खेत हैं जहाँ धान के, बहती नदी
के किनारे फिर आऊँगा लौट कर
एक दिन–बंगाल में; नहीं शायद
होऊँगा मनुष्य तब, होऊँगा अबाबील
या फिर कौवा उस भोर का–फूटेगा नयी
धान की फसल पर जो
कुहरे के पालने से कटहल की छाया तक
भरता पेंग, आऊँगा एक दिन !
बन कर शायद हंस मैं किसी किशोरी का;
घुँघरू लाल पैरों में;
तैरता रहूँगा बस दिन-दिन भर पानी में–
गंध जहाँ होगी ही भरी, घास की ।
आऊँगा मैं । नदियाँ, मैदान बंगाल के बुलायेंगे–
मैं आऊँगा । जिसे नदी धोती ही रहती है पानी
से–इसी हरे सजल किनारे पर ।

शायद तुम देखोगे शाम की हवा के साथ उड़ते एक उल्लू को
शायद तुम सुनोगे कपास के पेड़ पर उसकी बोली
घासीली जमीन पर फेंकेगा मुट्ठी भर-भर चावल
शायद कोई बच्चा – उबले हुए !
देखोगे, रूपसा के गंदले-से पानी में
नाव लिए जाते एक लड़के को–उड़ते फटे
पाल की नाव !
लौटते होंगे रंगीन बादलों के बीच, सारस
अँधेरे में होऊँगा मैं उन्हीं के बीच में
देखना !

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि किस तरह के बंगाल में एक दिन लौटकर आने की बात करता है ?
2. कवि अगले जीवन में क्या-क्या बनने की संभावना व्यक्त करता है और क्यों ?
3. अगले जन्मों में बंगाल में आने की क्या सिर्फ कवि की इच्छा है ? स्पष्ट कीजिए ।
4. कवि किनके बीच अँधेरे में होने की बात करता है ? आशय स्पष्ट कीजिए ।
5. कविता की चित्रात्मकता पर प्रकाश डालिए ।
6. कविता में आए बिंबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए ।
7. कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।
8. कवि अगले जन्म में अपने मनुष्य होने में क्यों संदेह करता है ? क्या कारण हो सकता है ?
9. **व्याख्या करें –**

   (क) ''बनकर शायद हंस मैं किसी किशोरी का;
   घुँघरू लाल पैरों में;
   तैरता रहूँगा बस दिन-दिन भर पानी में –
   गंध जहाँ होगी ही भरी, घास की ।''

   (ख) ''खेत हैं जहाँ धान के, बहती नदी
   के किनारे फिर आऊँगा लौट कर
   एक दिन – बंगाल में;''

कविता के आस-पास

1. कवि की इस कविता में मातृभूमि के प्रति उसका प्रेम दिखाई पड़ता है । ऐसी एक कविता वर्ग 11 की पाठ्यपुस्तक 'दिगंत भाग-1' में है 'मातृभूमि' । दोनों कविताओं की तुलना करते हुए एक टिप्पणी लिखिए ।
2. आपने इस दृष्टि से कभी अपनी मातृभूमि को देखा है ? अपनी मातृभूमि की सुंदरता पर विचार करते हुए स्पष्ट करें कि आप अगले जन्म में क्या चाहते हैं और क्यों ?

भाषा की बात

1. **निम्नांकित शब्दों के लिंग-परिवर्तन करें । लिंग-परिवर्तन में आवश्यकता पड़ने पर समानार्थी शब्दों के भी प्रयोग करें –**

   नदी, कौआ, भोर, नयी, हंस, किशोरी, हवा, बच्चा, बादल, सारस

2. कविता से विशेषण चुनें और उनके लिए स्वतंत्र विशेष्य पद दें ।
3. कविता में प्रयुक्त सर्वनाम चुनें और उनका प्रकार भी बताएँ ।

शब्द निधि

अबाबील : एक प्रसिद्ध काली छोटी चिड़िया जो उजाड़ मकानों में रहती है, भांडकी
पेंग : झूले का दोलन
रूपसा : बंगाल की नदी विशेष
सारस : पक्षी विशेष, क्रौंच

❑❑❑